क. परमेश्वर की पुकार और भविष्यवाणियाँ

- ५३८ ई.पू. में, परमेश्वर ने सत्तर साल की भविष्यवाणी के अंत को पूरा करने के लिए कूस्रू को बुलाया।
- ४५७ ई.पू. में, परमेश्वर ने सत्तर सप्ताह की भविष्यवाणी की शुरुआत करने के लिए अर्तक्षत्र को बुलाया (एज्रा ७:११-२७)।
- ७० सप्ताह की भविष्यवाणी ४५७ ई.पू. से ३४ ई. तक जाती है। ३४ ई. में, इस्राएल के राष्ट्र ने स्तिफनुस को पत्थर मारकर दिखा दिया कि उन्होंने यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दिया है।
- दानिय्येल ९:२४ के अनुसार, ७० सप्ताह लंबे समय की अवधि का हिस्सा हैं (वे "काटे" हुए हैं) वह लंबी अवधि २,३०० दिन की है (दानिय्येल ८:१४)।
- दानिय्येल ९ में, जिब्राएल ने दानिय्येल को समझाया कि २,३०० दिनों का दर्शन ७०-सप्ताह की अवधि के साथ शुरू होता है।

ख. एज्रा और नहेमायाह के लिए परमेश्वर की पुकार

- परमेश्वर ने एज्रा को क्यों चुना?
  - "क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ बूझ लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था।" (एज्रा ७:१०)
- परमेश्वर ने नहेमायाह को क्यों चुना?
  - नहेमायाह परमेश्वर के लोगों के बारे में भावुक था। यरूशलेम के अपमान के कारण उसका दिल टूट गया था। उसने अपने आप को स्वेच्छा से परमेश्वर के काम को पूरा करने के लिए दे दिया। (नहेमायाह १:४)

ग. आपके लिए परमेश्वर की पुकार

- पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की पुकार पहिले से ठहराये जाने का परिणाम है। परमेश्वर ने हमें किस लिए पहिले से ठहराया है?
  - यीशु की छवि में रूपांतरित होने के लिए (रोमियो ८:२९)
  - धर्मी ठहराने और महिमा देने के लिए (रोमियो ८:३०)
  - परमेश्वर की योजनाओं को जानने के लिए (१ कुरिन्थियों २:७-१०)
  - बेटे और बेटियों के रूप में अपनाया जाने के लिए (इफिसियों १:५)
  - एक विरासत प्राप्त करने के लिए (इफिसियों १:११)
- परमेश्वर की पुकार सर्व-जन के लिए है। हम सब को बचाए जाने के लिए बुलाया गया है, और हमें विशेष रूप से उनकी योजना में एक विशेष कार्य करने के लिए बुलाया गया है।

घ. परमेश्वर की पुकार पर आपकी प्रतिक्रिया

- यीशु इस लिए मरा ताकि सभी को परमेश्वर द्वारा बचाए जाने के लिए पहिले से ठहराया जा सके (यूहन्ना ३:१६)। हालाँकि, परमेश्वर हमें यह चुनने देता है कि क्या हम उसकी पुकार को स्वीकार करते हैं या नहीं।
- परमेश्वर हमें अपनी योजना में विशेष कार्य को करने के लिए पुकारता है। कुछ लोगों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया और परमेश्वर से दूर चले गए, जैसे कि शाऊल या यहूदा।
- कुछ अन्य लोगों को परमेश्वर की पुकार पर आपत्ति थी, जैसे कि मूसा (हालाँकि उसने अंततः इसे स्वीकार कर लिया)। दूसरों ने ख़ुशी-ख़ुशी परमेश्वर की योजना में अपने हिस्से को स्वीकार किया और उसे एज्रा और नहेमायाह की तरह अंजाम तक पहुँचाया।
- परमेश्वर की पुकार पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी?